हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन

बी.ए. तृतीय वर्ष

तृतीय प्रश्न-पत्र

हिन्दी साहित्य

-: प्रस्तुतकर्ता :-

डॉ० जगदीश शरण
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय भोजपुर
मुरादाबाद

स्वयं निर्मित

Scanned with CamScanner

सम्पूर्ण हिंदी साहित्य को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से चार कालों में बाँटा गया है —

(1) आदिकाल (सम्वत् 1000 से सम्वत् 1350 तक)

(2) भक्तिकाल (सम्वत् 1350 से सम्वत् 1700 तक)

(3) रीतिकाल (सम्वत् 1700 से सम्वत् 1900 तक)

(4) आधुनिक काल (सम्वत् 1900 से आगे)

आदिकाल को रामचन्द्र शुक्ल ने 'वीरगाथाकाल' नाम दिया है। आदिकाल की समयावधि में भारतीय समाज में उथल-पुथल की स्थिति थी। चारों ओर युद्ध का वातावरण था। राजा केवल अपनी शक्ति-प्रदर्शन हेतु युद्ध करने लगते थे। इस प्रदर्शन में ही उनके भीतर एक दूसरे के राज्य को हथिया लेने की दुष्प्रवृत्ति जागृत हो जाती थी। इन विषम परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। परिणामस्वरूप राजाश्रित

Scanned with CamScanner

भाट या चारण-भाट अपने आश्रयदाताओं के पराक्रमपूर्ण चरित्रों का गुणगान किया करते थे। इस काल में मुख्य रूप से तीन प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं - राजाओं की प्रशंसा कर धन की प्राप्ति, जनता का मनोरंजन तथा वीर-भावना की स्थापना। किसी राजा की कन्या का अपहरण कर उससे विवाह रचाना उस समय वीरोचित कार्य समझा जाता था। कविगण इस कार्य को बढ़ा-चढ़ा कर अपने काव्य में वर्णन करते थे। आदिकालीन काव्य ग्रन्थ प्रायः इसी प्रकार के हैं। इस युग में अधिकतर रासो काव्य लिखे गए। पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो, परमाल रासो, खुमान रासो, भरतेश्वर बाहुबली रास, संदेश रासक, मुंजरास, हम्मीर रासो, विजयपाल रासो आदि प्रसिद्ध रासो काव्य हैं। आदिकालीन काव्यों में कल्पना का आधिक्य होने के कारण जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति कम ही हुई है।

आदिकाल के अन्तिम चरण में 'मैथिल-कोकिल' के नाम से प्रसिद्ध विद्यापति अपनी सरल एवं कोमलकान्त पदावली में रचनाएँ लिख रहे थे। उनकी कविता सुनकर दिल्ली के बादशाह ने राजा शिवसिंह को मुक्त किया था। 'कीर्तिलता' में राजा कीर्तिसिंह द्वारा राज्य-प्राप्ति के प्रयत्नों का वर्णन है। विद्यापति ने अपने काव्य-ग्रन्थों में पुरुषार्थ नामक जीवन-मूल्य को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

अमीर खुसरो अपनी पहेलियों, मुकरियों और दो सखुनों में सामाजिक जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति को स्थान दे रहे थे। भक्तिकाल में आकर जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति अपनी चरम सीमा पर थी। कबीर, सूरदास, तुलसीदास, जायसी आदि का समस्त साहित्य मानवीय मूल्यों का समुच्चय है। इन कवियों ने निर्गुण-सगुण की उपासना का महत्त्व, प्रत्यक्ष ज्ञान का महत्त्व, अभेद का महत्त्व, उत्कृष्ट प्रेम, लोक कल्याण, नारी-सम्मान, धर्म का नैतिक रूप का अनुपालन, सत्य आचरण,

मानवता की सर्वव्यापकता, उत्कट जनवाद की भावना आदि जीवन-मूल्यों को अपने काव्य में उतारा है। बाह्याचारों और लोकमान्यताओं का खंडन तथा जाति-पाँति का खुला विरोध उन-काव्य की विशेषता रही है। एक आलोचक के अनुसार, समाज में व्याप्त दुःख, अन्याय, भेदभाव और पाखण्ड इन सन्तकाव्य भक्त-कवियों का आराध्य था। ये कवि लोक-कल्याण-भावना को कवि-कर्म में प्रवृत्त हुए थे। इन कवियों ने सत्यम् के पालन के लिए शुभ का समर्थन किया। ऐसा उन्होंने किसी व्यक्ति विशेष को सुधारने के लिए नहीं बल्कि समाज को पतन से बचाने के लिए किया। नैतिकता को उन्होंने जीवन का सर्वप्रमुख गुण माना है। तुलसी ने काव्य का उद्देश्य ही लोक-कल्याण बताया है—

कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

रीतिकालीन कविता की मुख्य विशेषता श्रृंगार का चित्रण माना रहा है। किन्तु इस काल में मानव-जीवन के नवीन मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। रीतिकालीन कवि किसी-न-किसी राजा के आश्रय में रहकर काव्य-रचना किया करते थे। अतः उनके काव्य को दरबारी काव्य कहा गया। राजनीतिक दृष्टि से रीतिकाल को 'हिजड़ों का युग' माना जाता है।

रीतिकालीन काव्य घोर श्रृंगारी काव्य माना जाता है। यहाँ तक कि इसे अश्लील काव्य तक की संज्ञा दे दी गई है। अनेक आलोचकों ने इसे सदाचार-विरोधी, समाज का घोर विरोधी और प्रतिक्रियावादी, रूढ़िवादिता और पाश्चात्यवादिता से दूषित बताया। यद्यपि रीतिकालीन कवि घोर श्रृंगारी थे फिर भी उनकी रचनाओं में जीवन-मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। बिहारी, केशव, घनानंद, देव, सेनापति आदि कवियों की रचनाओं में सामाजिक

...ओं के स्वातंत्र्य की वकालत की गई है। भूषण के काव्य में तो शाश्वत मूल्य कूट-कूट कर भरे हुए हैं। सिक्खा की नीति की कुण्डलियाँ और कतिपय सतसई ग्रन्थ नवीन जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति के बेजोड़ उदाहरण हैं।

आधुनिक काल में रचित काव्य-ग्रन्थों में निहित प्रवृत्तियों अथवा कि युग के विशिष्ट रचनाकार के नाम के आधार पर युग को कई भागों में विभाजित किया गया; यथा —

1- भारतेन्दु युग
2- द्विवेदी युग
3- छायावाद
4- प्रगतिवाद
5- प्रयोगवाद
6- स्वातन्त्र्योत्तर युग

आधुनिक काल में रचित साहित्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि सार्वभौम जीवन-मूल्यों की सर्वाधिक प्रखर अभिव्यक्ति इसी काल के अन्तर्गत हुई है। इस युग में राष्ट्रीय चेतना, विपन्न वर्ग की प्रबलता, नारी का सम्मान रूप, व्यक्ति के मन का सम्पूर्ण अंकन, व्यापक लोककल्याण की भावना, शोषित वर्ग से सहानुभूति, समान धन-विभाजन की वकालत, रूढ़ियों का विरोध, नूतनता को प्रश्रय, शोषकों के प्रति आक्रोश, मानव को सर्वाधिक महत्त्व, विज्ञान आदि जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, अज्ञेय, सियारामशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, रामधारीसिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, नरेन्द्र शर्मा, नागार्जुन आदि आधुनिक काल के प्रमुख कवि हैं जिनके काव्य में नवीन जीवन-मूल्यों की प्रखर अभिव्यक्ति हुई है।

Scanned with CamScanner